संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श

संपादक
राधावल्लभ त्रिपाठी
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
नौनिहाल गौतम

Sanskrit Sahitya Mein SthreeVimarsha : Proceedings of the national seminar held on 29-30 August 2015 at Sagar, organised by Sahitya Akademi with the collaboration of Dr. Harisingh Gour University, Sagar (M.P.) edited by Radhavallabha Tripathi, Anand Prakash Tripathi & Navnihal Goutham, Sahitya Akademi, New Delhi (2020) ₹ 250/-

कॉपीराइट © साहित्य अकादेमी 2020 Copyright © Sahitya Akademi 2020

राधावल्लभ त्रिपाठी (1949) : संपादक Radha Vallabha Tripathi (1949): Editor
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी (1960) : सह संपादक Anand Prakash Tripathi (1960): Editor
नौनिहाल गौतम (1984) : सह संपादक Navnihal Goutham (1984): Editor

विधा : संगोष्ठी आलेख Genre: Seminar Papers
प्रकाशक : साहित्य अकादेमी Published by Sahitya Akademi

प्रथम संस्करण : 2020 First Edition : 2020
मूल्य : दो सौ पचास Price : ₹ 250/-

ISBN : 978-93-89778-90-8

सर्वाधिकारः सुरक्षितः। अकादम्याः अनुमतिं विना छायाप्रतिः रिकॉर्डिंग इति वा केनापि अन्यसूचनाभण्डारणेन पुनःप्राप्तिप्रणाल्या च सह केनापि वैद्युता यान्त्रिकेन माध्यमेन वा कस्यापि अंशस्य पुनरुत्पादनमुपयोगः वा कर्तुं न शक्यते।

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय : रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001
secretary@sahitya-akademi.gov.in, 011-23386626/27/28
विक्रय अनुभाग : 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110 001
sales@sahitya-akademi.gov.in, 011-23745297/23364204
कोलकाता : 4, देवेंद्रलाल ख़ान रोड, कोलकाता-700 025
rs.rok@sahitya-akademi.gov.in, 033-24191683/24191706
चेन्नई : मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443(304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई-600 018
chennaioffice@sahitya-akademi.gov.in, 044-24311741
मुंबई : 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400 014
rs.rom@sahitya-akademi.gov.in, 022-224135744/24131948
बेंगलूरु : सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बेंगलूरु-560 001
rs.rob@sahitya-akademi.gov.in, 080-22245152/22130870

शब्द-संयोजक : विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, ट्रोनिका सिटी, लोनी, ग़ाज़ियाबाद-201 102

मुद्रक : अडयार स्टूडेंट ज़ेराक्स प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई

वेबसाइट : www.sahitya-akademi.gov.in

11. कालिदास के नाटकों में स्त्री
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 139

12. महाकवि बाणभट्ट का स्त्री-चिंतन
राघवेंद्र शर्मा 155

13. हर्षकालीन संस्कृत साहित्य में स्त्री
सुरेंद्र कुमार यादव 163

14. उत्तररामचरितम् में स्त्री
गोपाल लाल मीणा 177

15. समकालीन संस्कृत काव्य में स्त्री
सरोज कौशल 193

16. आधुनिक संस्कृत साहित्य में स्त्री
अर्चना जोशी 203

17. समकालीन संस्कृत साहित्य में स्त्री
मंजुलता शर्मा 217

18. संस्कृत काव्य परंपरा में नारी
ऋषभ भारद्वाज 229

19. जानकीजीवनम् महाकाव्य में स्त्री
संजय कुमार 240

20. आचार्यराधावल्लभीयसंस्कृतसाहित्ये नारीचेतना
पूर्णचंद्र उपाध्याय 249

लेखकों के पते 255

कालिदास के नाटकों में स्त्री

आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

विश्वविख्यात कवि और नाटककार कालिदास भारतीय संस्कृति के गौरवपुरुष हैं। उन्होंने रघुवंशम्, ऋतुसंहार और मेघदूतम महाकाव्य की सर्जना के साथ अभिज्ञानशाकुंतलम्, मालविकाग्निमित्रम् और विक्रमोर्वशीयम् नाटक लिखे, जो उनकी अक्षयकीर्ति के प्रकाशस्तंभ हैं। ये नाटक पौराणिक कथा और चरित्रों पर आधारित हैं। तीनों ही नाटक प्रेम कथाएँ हैं। इनमें राजा और अप्सरा की प्रेम कथा के साथ ही राजा और राजकुमारी की भी प्रेमकथा वर्णित है। नायक और नायिका के प्रथम मिलन, प्रेमालाप, शाप, वियोग, पुनर्मिलन आदि प्रमुख घटनाक्रमों में ही प्रेमकथाओं का पाठ तैयार किया गया है। उतार-चढ़ाव भरी दोनों की प्रेममय जिंदगी में संघर्ष की उपस्थित अपरिहार्य है। स्त्री और पुरुष अर्थात् नायक एवं नायिका दोनों के जीवन में प्रेम की अहम् भूमिका है। गार्हस्थजीवन की डोर पुत्रजन्म से बँधी हुई है। गृहस्थ जीवन के सुख-दुःख की स्थितियाँ प्रायः नहीं हैं। नायिकाओं के साथ उनकी प्रियसखियाँ कथा के केन्द्र में हैं। अपनी सखी-नायिका का सहयोग, सांत्वना और संदेश देने में उनके जीवन की सार्थकता सिद्ध है। गौर करने की बात यह है कि कालिदास प्रेम के अन्यतम कवि-नाटककार होने के कारण स्त्री जीवन की कोमल मनोभूमियों का संस्पर्श करने में कहीं चूक नहीं करते हैं। स्त्री-सत्ता की पूरी तरह उपेक्षा करना उनके नायकों के बूते की बात नहीं है। राजा दुष्यंत इसके सबसे बड़े प्रमाण कहे जाएँगे। अपने नाटकों में प्रसंगवश कालिदास ने स्त्री-पुरूष प्रेम संबंध के साथ ही स्त्री जीवन के कतिपय महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर अपनी बेबाक टिप्पणी देना जरूरी समझा है। ये टिप्पणियाँ तद्युगीन स्त्री-समय और जीवन यथार्थ को समझने की कुंजी हैं। स्त्री की स्वच्छंदता, उन्मुक्त प्रेम और विवाह, प्रकृति से जीवन का नैकट्य, ममत्व, वात्सल्य, उच्चभाव बोध, मानसिक चिंतन, आत्मशक्ति, मनोबल,